ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 395-397

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में अध्यापकों की भाषायी दक्षता का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर अध्ययन

1. प्रमोद कुमार पाण्डिया 2. सतीश चन्द

शोधअध्येता, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर, (राजस्थान), भारत

शोध निर्देशक, बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई) गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर (राजस्थान), भारत

Received- 11.08.2020, Revised- 15.08.2020, Accepted - 19.08.2020 E-mail: nnurai321@gmail-com

सारांश : ***शिक्षण व्यवसाय में शिक्षक की आवासीय पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण स्थान रखती है। आवासीय पृष्ठभूमि चाहे ग्रामीण हो या शहरी एक शिक्षक के लिए शिक्षण प्रशिक्षण से लेकर उनके शिक्षण व्यवसाय को प्रभावित करती है। एक तरफ ग्रामीण आवासीय पृष्ठभूमि जहाँ भौतिक सुविधाओं का अभाव होता है जिसके कारण एक शिक्षक को शिक्षण प्रशिक्षण से लेकर उनके शिक्षण व्यवसाय में आने तक अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है वही दूसरी तरफ शहरी आवासीय पृष्ठभूमि जहाँ संचार, यातायात तथा अनेक प्रकार की भौतिक सुविधाएँ सहज उपलब्ध हो जाती है। एक तरफ संघर्ष भरा दैनिक जीवन वहीं दूसरी तरफ आरामदायक वातावरण दोनों ही आवासीय पृष्ठभूमि एक शिक्षक की भाषायी दक्षता को प्रभावित करती हैं। आवासीय पृष्ठभूमि उनकी ऊर्जा, जोश, कार्य के प्रति उत्साह को प्रभावित करती है, जो उनकी भाषाई दक्षता से परिलक्षित होती है। शिक्षण कार्य में आवासीय पृष्ठभूमि अध्यापकों की शिक्षण कला की कमजोरी या दक्षता को प्रदर्शित करता है। शोधकर्त्रा द्वारा किया गया यह अध्ययन वास्तविक सर्वेक्षण पर आधारित होने के कारण सत्य अनुभवों को प्रकट करता है, जो शिक्षाविदों व सरकार के समक्ष कुछ ज्वलंत समस्याओं व उनके संभावित सुझावों को प्रकट कर शिक्षा जगत में वांछित परिवर्तन की मांग रखता है।***

कुंजीभूत शब्द– शिक्षण व्यवसाय, आवासीय, पृष्ठभूमि, आरामदायक, वातावरण, संघर्ष भरा, दैनिक जीवन, कमजोरी।

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा वस्तुतः सभी के लिए है तथा यह हमारे सर्वांगीण विकास का मूलभूत आधार है। शिक्षा की भूमिका मानव जीवन को उत्कर्षता प्रदान करने में निहित है। यह मानव संवेदनशीलता एवं अभिज्ञान का परिष्कार करके राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक प्रकृति, मस्तिष्क एवं आत्मा की स्वतंत्रता का विकास करती है जो हमारे संविधान में उल्लिखित लक्ष्यों की पुष्टि करती है साथ ही यह राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता के मूलमन्त्र का शोध एवं अभिवृद्धि है। इसी संकल्पना के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय पाठ्य चर्चा 2005 के अनुसार सभी बच्चे तीन वर्ष की आयु से पूर्व न केवल अपनी भाषा की मूलभूत संरचनायें और उपसंरचनायें सीख जाते है, बल्कि वे यह भी सीख लेते हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में इनका किस प्रकार उचित प्रयोग करना है। (उदाहरण के लिए वे केवल भाषायी दक्षता नही, बल्कि संम्प्रेषण की दक्षता भी सीखते हैं)। तीन वर्ष के बच्चों के संज्ञानात्मक क्षेत्र में आने वाले किसी भी विषय पर उसके साथ सार्थक बातचीत की जा सकती है। भाषा अभिव्यक्ति का साधन है। मनुष्य भाषा के द्वारा सहजता व सरलता से एक दूसरे के क्रियाकलापों व आचार–विचार को समझ सकता है। अतः यह स्वाभाविक है कि समृद्ध और संवेदनशील अवसरों वाले बच्चों के अलावा सामान्य बच्चे जन्मजात नैसर्गिक भाषा क्षमता के साथ जन्म लेते है। परन्तु प्रत्येक भाषा विशेष प्रकार के सामाजिक सांस्कृतिक और राजनैतिक सन्दर्भ में अर्जित की जाती है। प्रत्येक बच्चा यह सीखता है कि क्या कहना है, किसे कहना है, कहाँ कहना है। लम्बे समय से हम भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की बात सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने के कौशलों के सन्दर्भ में करते रहे हैं। भाषा शिक्षण में पृथक–पृथक कौशलों पर बल देने से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नही हुए है। अतः भाषाई निपुणता को सम्यक और समग्र परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। क्योंकि बोलने के साथ–साथ हम सुनते है और जब हम लिखते हैं तो हम कई अर्थो में पढ़ते भी है। इसके अतिरिक्त ऐसी स्थितियाँ भी होती हैं। जब हम इन चारों कौशलों और अन्य अनेक संज्ञानात्मक क्षमताओं का एक साथ प्रयोग करते है, जैसे कुछ लोगों द्वारा किसी नाटक को इकट्ठा पढ़ना और उसके मंचन के लिए कुछ आधारभूत बिन्दु लिखना, जिनकी आवश्यकता उन स्थितियों में होती है।

जब हम उच्च स्तर की भाषा सम्बन्धी सम्प्राप्ति प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होते है तब हम जीवन सम्बन्धी आलोचनात्मक चिन्तन का कौशल, तालमेल करने का कौशल मना करने का कौशल और परिस्थितियों से निपटने तथा स्वयं के समायोजन आदि के कौशलों का रोजमर्रा के जीवन की चुनौतियों और मांगों के सन्दर्भ में

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

इसके महत्व को महसूस करते है। इस तरह भाषा बिना हम शिक्षा के किसी भी क्रियाकलाप की कल्पना नहीं कर सकते इसलिए भाषा शिक्षण का महत्व अपने आप में बढ़ जाता है। भाषा संस्कृति का आधार, साहित्य का आधार, सामाजिक प्रक्रिया का आधार, मनुष्य के चिंतन का माध्यम व संप्रेषण का भी आधार है। भाषा से ही हमारा बौद्धिक, मानसिक, संवेगात्मक व सामाजिक विकास हुआ है। एक तरह से भाषा से ही मनुष्य का विकास हुआ है।

शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक की भाषाई दक्षता, योग्यता, आदि प्रमुख तत्व है जो कहीं न कही शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में अपनी भूमिका अदा करते हैं। भाषाई दक्षता शिक्षक की शैक्षणिक दक्षता को निर्धारित करने वाली प्रमुख कसौटी है। चूंकि शिक्षक को विद्यार्थियों के अधिगम हेतु प्रयुक्त भाषा का विशेष ज्ञान होगा तभी वह सम्भावित समस्याओं का तर्कसंगत समाधान दे सकता है। अध्यापक की सफलता या कुशलता (दक्षता) इस बात पर निर्भर करती है कि वह उन कक्षा की परिस्थितियों के समाधान हेतु अपनी उपयुक्त योग्यता का प्रयोग किस प्रकार करता है। शिक्षण में भाषाई दक्षता के इसी सम्प्रत्यय को लेकर इस शोध अध्ययन को किया गया है।

शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का मुख्य अंग है। आज के के दौर में शिक्षा, शिक्षक एवं शैक्षिक प्रक्रिया को सही दिशा देने हेतु जरूरी है कि शिक्षक को उचित संचरणीय एवं प्रभावोत्पादक प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। शिक्षक की भाषाई दक्षता की प्रासांगिकता, गुणवत्ता, एवं क्षेत्र स्वीकृतता के ज्ञान द्वारा हमें प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की व्यूह रचना किस प्रकार की हो यह तय करना होगा, बहुमुखी शिक्षक के निर्माण हेतु बहुमुखी शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम पर गहनता से विचार करना होगा क्योंकि शिक्षक की गुणवत्ता उसकी शिक्षण दक्षता जिसमें भाषाई दक्षता बहुत ही महत्वपूर्ण है द्वारा निर्धारित होती है।

शिक्षा व्यवस्था का दायित्व संभालने वाले शिक्षकों की गुणवता में अपेक्षित सुधार लाने हेतु इस क्षेत्र में किये जाने वाले इस शोधकार्य को पर्याप्त औचित्यपूर्ण कहा जा सकता है, जिससे शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में अध्यापकों की भाषाई दक्षता का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर अध्ययन से अध्यापकों की आवासीय पृष्ठभूमि का उनकी भाषाई दक्षता पर प्रभाव को समझा जा सकेगा। जिसके आधार पर इन शिक्षकों रूपी अमूल्य रत्नों को तराशने के उपाय सुझाये जा सकेंगे।

अध्ययन के उद्देश्य– शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में अध्यापकों की भाषायी दक्षता का आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ– ग्रामीण तथा शहरी आवासीय पृष्ठभूमि के अध्यापकों की भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

भाषायी दक्षता– कक्षा शिक्षण का प्रमुख आधार जिस भाषा का होता है वह अध्ययन अध्यापन का माध्यम होता है। अतः भाषा के सभी कौशलों (सुनना, बोलना, पढना, लिखना और चिंतन)का विकास होने पर ही मस्तिष्क में स्पष्टता, मननशीलता, अपनी मौलिकता आती है और तभी सम्पूर्ण अभिव्यक्ति झलकती है। इस अभिव्यक्ति दक्षता को भाषायी दक्षता कहा गया है।

अध्ययन का सीमांकन– प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में बिहार राज्य के तिरहुत प्रमण्डल के मुजफरपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, वैशाली जिलों में स्थित शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में कार्य कर रहें 400 अध्यापकों जिसमें 200 ग्रामीण तथा 200 शहरी अध्यापकों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण :–शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित भाषाई दक्षता निर्धारण मापनी का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना– महिला तथा पुरूष अध्यापकों की भाषाई दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ग्रामीण तथा शहरी आवासीय पृष्ठभूमि के अध्यापकों के भाषाई दक्षता निर्धारण मापनी के विभिन्न आयामों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की तुलना का आरेखिय प्रदर्शन।

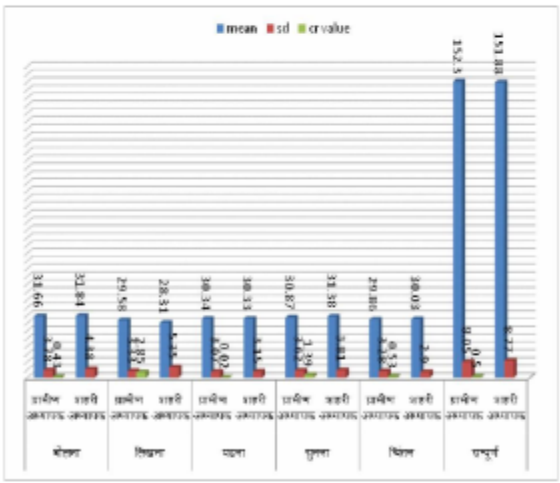

निष्कर्ष– ग्रामीण तथा शहरी आवासीय पृष्ठभूमि के अध्यापकों की बोलने, पढने, सुनने, चिंतन व सम्पूर्ण भाषाई दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि भाषाई दक्षता के लिखने आयाम में सार्थक अन्तर है। प्राप्त

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है, कि ग्रामीण आवासीय पृष्ठभूमि के अध्यापकों की लिखने का स्तर तथा शहरी आवासीय पृष्ठभूमि के अध्यापकों की तुलना में उच्च पाया गया है।

शैक्षिक उपादेयता– अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि ग्रामीण तथा शहरी आवासीय पृष्ठभूमि के अध्यापकों की बोलने, पढने, सुनने, चिंतन व सम्पूर्ण भाषाई दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि ग्रामीण आवासीय पृष्ठभूमि के अध्यापकों की लिखने का स्तर तथा शहरी आवासीय पृष्ठभूमि के अध्यापकों की तुलना में उच्च पाया गया है। शोधकर्त्ता द्वारा प्रदत्त संकलन हेतु किये गये सर्वेक्षण में प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा इस समस्या का कारण यह अनुभूत किया गया कि ग्रामीण आवासीय पृष्ठभूमि के अध्यापकों की दिनचर्या में अधिक मेहनत होने के कारण वे अपने कौशल में अधिक दक्ष होते हैं। शोधकर्त्ता द्वारा किये गये इस अध्ययन के परिणाम शिक्षाशास्त्रियों को अध्यापकों में भाषाई दक्षता के विकास में प्रशस्त करेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिपाठी ,श्री राजमणी, "शिक्षण कला" (2009) राधा पब्लिकेशन पृष्ठ 200
2. मेहता, डी. डी.–"भारत में शिक्षा का विकास" टंडन पब्लिकेशन, बुक्स मार्केट, लुधियाना पृष्ठ 105–120
3. एक्सपेरीमेन्ट इन एजुकेशनल, वोल्यूम गगअ (II) 211–223 आई0ई0ए0 788, जुलाई 1999 एवं जनवरी 2000
4. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका–वर्ष–27, अंक–1, जन.–जून 2008, पृष्ठ सं. 21
5. भार्गव, डॉ. महेश, " आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन (2007), एच.पी.भार्गव बुक हाऊस , आगरा, पृ.स. 262
6. अस्थाना, डॉ. बिपिन एवं श्री वास्तव, डॉ. विजया (2011), "शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी", अग्रवाल पब्लिकेषन्स, आगरा। पृ.सं.440

*****